Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 6, December-2022, ISSN 2230-7540

समायोजन एवं बुद्धि के विभिन्न क्षेत्रों के आधार पर व्यक्तित्व के पहलूओं का अध्ययन

ममता शर्मा[1]*, डॉ. सविता गुप्ता[2]

[1] शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

[2] शोध पर्यवेक्षक, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)

सार - *विकास एक प्रक्रम हैए जिसे प्रेक्षण और उत्पाद जाना जा सकता है। विकासात्मक परिवर्तनए व्यक्तित्व की संरचना एवं उसके प्रकार्य में होते है। दैहिक संरचना में परिवर्तन जीवन पर्यन्त होते रहते है। ये परिवर्तन शरीर की कोशिकाओं एवं उतकों तथा अन्य रासायनिक तत्वों में होते रहते है। इसके साथ ही व्यक्ति के सवेंगोंए व्यवहारों एवं अन्य व्यक्तित्यशाली गुणों में परिवर्तन होते रहते है जिन्हें प्रेक्षण द्वारा प्रत्यक्ष या व्यक्ति द्वारा किये गये व्यवहार के परिणाम के आधार पर परोकरू जाना जा सकता है। चूँकि विकास प्रगतिशील एवं निषिचत्त क्रम में होनेवाला परिवर्तन है। इस परिवर्तन से व्यक्ति में समायोजन की योग्यता विकसित होती है तथा यह एक पूर्ण मानव बनता है। विकास में अनुक्रम होता है अर्थात् एक अवस्था का विकास इसके पूर्व की अवस्था के विकास के प्रारूप का निर्धारण करता है तथा आगे की अवस्था के विकास के प्रारूप का निर्धारण करता है। अत स्पष्ट है कि विकास का अनुक्रम गर्भादान के समय से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक सिलसिलेवार होता रहता है। इसी विकास को गत्यात्पक कहा जाता है। किसी व्यक्ति का चाहे कितने ही मानसिक या शारीरिक गुणों का योग होए कितना ही चिन्तनशील या ज्ञानी होए परन्तु उसके व्यवहार में गतिशीलता न होने पर उसका व्यवहार और समायोजन अधूरा रह जाता है।*

कुंजी शब्द - *समायोजन, बुद्धि के विभिन्न क्षेत्रों के आधार, व्यक्तित्व एंव पहलूओं का अध्ययन।*

----------X----------

प्रस्तावना

किसी भी राष्ट्र अथवा समाज के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन मानव है मानव द्वारा उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर विकास के मार्ग को प्रशस्त किया जाता है संसाधनों का प्रयोग किस तरह किया जाना है और कौन सा संसाधन किस कार्य के लिए उपयोगी है का ज्ञान शिक्षा द्वारा प्राप्त होता है शिक्षा मानव जीवन का श्रंगार है यह मानव विकास का मूल साधन है इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास तथा उसके ज्ञान एवं कला, कौशल में वृद्धि एवं व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है यह मानव विकास का मूल साधन है उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है एक शिक्षित व्यक्ति अपने परिवार समाज और देश को गौरवान्वित करता है।

प्राचीन काल से ही शिक्षा का अस्तित्व विद्यमान रहा है और संस्कृति तथा सभ्यता की उन्नति में शिक्षा के योगदान को स्वीकार किया गया है शिक्षक के द्वारा ही मनुष्य के कीर्ति का प्रकाश चारों और फैलता है जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश पाकर कमल का फूल खिल उठता है उसी प्रकार शिक्षा के प्रकाश को पाकर प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व खिल उठता है शिक्षा बिना मनुष्य का जीवन अधूरा रहता है शिक्षा अंधकार से प्रकाश की ओर मानव यात्रा का नाम है शिक्षा द्वारा मनुष्य के अनंत चक्षु खुलते हैं उसे आंतरिक व अलौकिक प्रकाश मिलता है अर्थात विद्या के समान कोई नेत्र नहीं है जिस प्रकार भौतिक वस्तुओं को देखने के लिए आंखों की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सभी दृश्य - अदृश्य वस्तुओं तथा घटनाओं को समझने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा बालक की शक्तियों का प्रकटीकरण करती है बालक में

www.ignited.in

विद्यमान प्रकृति प्रदत शक्तियां बीज के रूप में शिक्षा इन बीज रूपी शक्तियों को वृक्ष रूप में विकसित करने का माध्यम है शिक्षार्थी को बाहर से कुछ नहीं प्रदान किया जाता है बल्कि उसके अंदर की जो शक्तियां होती है और जिन शक्तियों के बारे में अनभिज्ञ होता है उन शक्तियों से परिचित कराते हुए शिक्षा उन्हें विकसित होने के अवसर प्रदान करती है। समायोजन सामंजस्य व्यवस्थापन या अनुकूलन भी कहते हैं। व्यक्ति को सफल जीवन व्यतीत करने के लिए अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ समायोजन स्थापित करना आवश्यक हो जाता है। व्यक्ति के जीवन में अनेक प्रकार की अनुकूल एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती रहती हैं ए जिनका उसे समय-समय पर सामना करना पड़ता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी अलग-अलग क्षमता के अनुसार समायोजन करने का प्रयत्न करते हैं कुछ व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियों का सामना करने में सफल होते हैं तो कुछ व्यक्ति हार मानकर अपना मानसिक संतुलन खो बैठते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति तनाव का शिकार बने रहते है। ये बातें शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

समायोजन की आवश्यकता

सर्वांगीण विकास के लिए उसका वातावरण के साथ समायोजन अत्यंत आवश्यक है। इस आवश्यकता को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से स्पष्ट किया जा रहा है : प्राचीन काल से ही बुद्धि ज्ञानात्मक क्रियाओं में चर्चा का विषय रहा है। कहा जाता है कि , 'बुद्धिर्यस्य बलं तस्य ' अर्थात् जिसमें बुद्धि है वही बलवान है। बुद्धि के कारण ही मानव अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ माना जाता है। मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी बुद्धि चर्चा का विषय रहा है। हजारों वर्ष पूर्व से ही व्यक्तियों को बुद्धि के आधार पर अलग-अलग वर्गों में बांटा गया। कुछ व्यक्ति बुद्धिमान कहलाते हैं, कुछ कम बुद्धि के , कुछ मूढ बुद्धि के तो कुछ जड़ बुद्धि कहलाते हैं। परन्तु बुद्धि के स्वरूप को समझना बड़ा कठिन है। बुद्धि के स्वरूप पर प्राचीन काल से ही मतभेद चले आ रहे हैं तथा आज भी मनोवैज्ञानिकों तथा शिक्षाविदों के लिए भी बुद्धि वाद-विवाद का विषय बना हुआ है। 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध से भी बुद्धि के स्वरूप को समझने हेतु मनोवैज्ञानिकों ने प्रयास प्रारम्भ किए परन्तु वे भी इसमें सफल नहीं हुए तथा बुद्धि की सर्वसम्मत परिभाषा न दे सके। वर्तमान में भी बुद्धि के स्वरूप के सम्बंध में मनोवैज्ञानिकों के विचारों में असमानता है। अलग-अलग मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि के स्वरूप को अलग-अलग ढंग से पारिभाषित किया।

समायोजन की मुख्य परिभाषाएँ

कॉलमेन के अनुसार, समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाईयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है। स्मिथ के अनुसार, अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा सन्तोष देने वाला है। स्किनर के अनुसार, समायोजन शीर्षक के अन्तर्गत हमारा अभिप्राय इन बातों से है, की सामूहिक क्रियाकलापों में स्वस्थ तथा उत्साहमय ढंग से भाग लेना समय पर नेतृत्व का भार उठाने की सीमा तक उत्तरदायित्व वहन करना तथा सबसे बढ़कर समायोजन में अपने को किसी भी प्रकार को धोखा देने से बचने की कोशिश करना है। गेट्स - "समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

कौलमेन - "समायोजन व्यक्ति की अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा कठिनाईयों के निराकरण के प्रयासों का परिणाम है।"

गेट्स व अन्य - "समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और अपने वातावरण के बीच सन्तुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन करता है।"

डा एस.एस. चैहान - "समायोजन का अर्थ व्यक्ति द्वारा आरोपित सामाजिक पर्यावरण की अपेक्षाओं व दबावों के प्रति उसकी अनुक्रिया है। यह अपेक्षा आन्तरिक तथा बाह्य होती है जिसके प्रति व्यक्ति अनुक्रिया करता है।"

समायोजित व्यक्ति के लक्षण

(1) सुसमायोजित व्यक्ति वातावरण एवं परिस्थितियों का ज्ञान और नियंत्रण रखने वाला एवं उन्हीं के अनुसार आचरण करने वाला होता है।

(2) स्वयं और पर्यावरण के मध्य सन्तुलन बनाये रखता है।

(3) अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं के अनुसार पर्यावरण एवं वस्तुओं का लाभ उठाता है।

(4) साधारण परिस्थितियों में सन्तुष्ट और सुखी रहकर अपनी कार्यकुशलता को बनाये रखता है।

(5) उसके उद्देश्य स्पष्ट होते है और वह साहसपूर्वक एवं ठीक ढंग से कठिनाईयों एवं समस्याओं का सामना करता है।

www.ignited.in

व्यक्ति अपने समायोजन के लिए निम्नलिखित कदम उठाता है -

1. समस्या का अंकन - व्यक्ति के सामने जैसे ही आवश्यकता उत्पन्न होती है, उसके लिए तत्सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होती है। व्यक्ति इन समस्याओं का वर्गीकरण करता है, कुछ समस्याओं को विशिष्ट वर्ग में रखता है। उनके समाधान क्षेत्र तलाशता है तथा उसे समस्या की गम्भीरता का निर्धारण करता है।

2. निर्णय निर्माण - समस्या की गम्भीरता तथा वर्गीकरण के बाद उस समस्या के समाधान हेतु आवश्यक समाधानों की सूचनी तैयार की जाती है तथा प्रत्येक समाधान की आवश्यकता के सन्दर्भ का मूल्यांकन किया जाता है।

3. क्रियान्वयन - समुचित समाधान के सम्बन्ध में निर्णय लेकर चयन करने के उपरान्त उस समाधान को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति क्रियाएँ प्रारभ्ंा कर देता है इस अवस्था में क्रियान्वयन के समय कठिनाईयाँ आती है उनके अनसुार वह अपनी क्रियाओं में आवश्यक संशोधन भी करता चलता है

समायोजन के क्षेत्र

समायोजन व्यक्ति के व्यक्तित्व एवं जीवन का महत्वपूर्ण घटक है, समायोजन को निम्न क्षेत्रों में वर्गीकृत किया जा सकता है। संक्षेप मे कहा जा सकता है कि समायोजन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीने की आवश्यकताओं व उनकी पूर्ति को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच शारीरिक व मनोवैज्ञानिक संतुलन एवं समता का स्तर बनाये रखता है समायोजन के सामान्य रूपों को विश्लेषण करने पर पता चलता है कि व्यक्ति कोई आवश्यकता अनुभव करता है तो उसे एक ऐसे उद्देश्य और परिणाम पर ले जाती है जिससे आवश्यकता पूरी होती है, अपने व्यवहार व कार्य में उसे कुछ रूकावट व बाधा का सामना करना पड़ता है। जिसके फलस्वरूप वह तनाव अनुभव करता है अपना व्यवहार बदलता है तीव्र, रूकावट से बचने की कोशिश करता है व समाधान ढूँढ निकालता है।

बुद्धि की परिभाषा

मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धि की परिभाषाओं को तीन वर्गों में रखा है-

1. बुद्धि सामान्य योग्यता है।
2. बुद्धि दो या तीन योग्यताओं का योग है।
3. बुद्धि समस्त विशिष्ट योग्यताओं का योग है।

- मानसिक कष्ट और व्याधियों से अपने को दूर रखने के लिए।
- अपने मन और मस्तिष्क को व्यर्थ के चिंतन सें दूर रखने के लिए।
- ध्यान की एकाग्रता बनाये रखने के लिए ।
- विभिन्न गतिविधियों और कार्यकलापों में सक्रिय और उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए।
- पलायन करना , चुनौती देना जैसी कुप्रवृत्तियों को न पनपने देने के लिए।
- जीवन में शौक पैदा करने के लिए।
- अपने काम के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करने के लिए।
- जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अधिकतम उपलब्धि प्राप्त करने के लिए।

समायोजन का विकास

मन के अनुसार, ''निरंतर रहने वाली चिंता शारीरिक और मानसिक रूप से कष्टदायी होती है, यहाँ पर हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि किसी भी प्रकार की असफलता विद्यार्थियों में निराशा उत्पन्न करती है निराशा के द्वारा मानसिक संघर्ष उत्पन्न होता है और मानसिक संघर्ष की निरंतरता तनाव को उत्पन्न कर देती है।'' अत: समायोजन अषान्ति उत्पन्न हो सकती है। प्रत्येक विद्यालय का यह कर्तव्य होता है कि वह अपने विद्यार्थियों में समायोजनषीलता को बनाये रखें। इसके लिए विद्यालय द्वारा निम्नलिखित कार्य किये जाने चाहिए :

1. किसी प्रकार की समस्या का सामना करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
2. निराशा और असफलताओं का सामना करने के लिए प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए।
3. विशेष शिक्षा एवं दीक्षा का प्रबंध होना चाहिए।
4. मार्गदर्शन की व्यवस्था हो ताकि वे वैयक्तिक, शैक्षिक, व्यावसायिक चिंताओं का सही समाधान कर सकें।
5. वातावरण में आपसी तनाव को प्रेम तथा सौहार्द के साथ दूर करना चाहिए।

6. जीवन का उद्देश्य और वे भविष्य में क्या बनेंगे, बता देना चाहिए ताकि उनके मन से असुरक्षा की भावना निकल सके।

7. माता-पिता को बच्चों के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए, इसका ज्ञान समय-समय पर अध्यापक संरक्षण गोष्ठी के माध्यम से समझना चाहिए ताकि बालकों के प्रति स्वयं के कर्तव्य को वे अधिक अच्छे तरीके से समझ सकें।

समायोजन

'तनाव तथा आवश्यकताओं के साथ व्यवहार करने के व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम समायोजन है तथा समायोजन एक प्रक्रिया है, जिसमें कोई व्यक्ति तनाव अंदरूनी विरोधों के साथ व्यवहार करने का प्रयास करता है तथा अपनी आवश्यकताओं को पूरा करता है, इस प्रक्रिया में वह अपने वातावरण के साथ सहयोगी संबंध बनाने का प्रयत्न भी करता है।'' आईजनेक के अनुसार, ''समायोजन वह अवस्था है जिसमें एक ओर व्यक्ति की आवश्यकताएँ तथा दूसरी ओर वातावरण के कुछ दावे पूर्ण रूप से संतुष्ट होते है अथवा समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आवश्यकताओं और दावों में सामंजस्य संबंध प्राप्त होता है।'' उपरोक्त कथन से स्पष्ट है कि, व्यक्ति की बाहर व आंतरिक आवश्यकताओं के मध्य संतुलन होना अनिवार्य है। अत: समायोजन वह स्थिति है जहाँ व्यक्ति का व्यवहार समाज या संस्कृति सम्मत हो और साथ-साथ उसकी स्वयं की आवश्यकता पूर्ति करने वाला हो। अत: व्यवहार की पर्याप्तता ही समायोजन की कुंजी हैं।

बुद्धि के सिद्धान्त :- बुद्धि के स्वरूप एवं बुद्धि के सिद्धान्त)Theories of Intelligence) - दोनों ही बुद्धि के विषय के बारे में विचार प्रकट करते हैं परन्तु फिर भी दोनों में भिन्नता दृष्टिगत होती है। बुद्धि के सिद्धान्त उसकी संरचना को स्पष्ट करते हैं जबकि स्वरूप उसके कार्यों पर प्रकाश डालते हैं।

गत शताब्दी के प्रथम दशक से ही विभिन्न देशों के मनोवैज्ञानिकों में इस बात की रूचि बढ़ी की बुद्धि की संरचना कैसी है तथा इसमें किन-किन कारकों का समावेश है। इन्हीं प्रश्नों के परिणाम स्वरूप विभिन्न कारकों के आधार पर बुद्धि की संरचना की व्याख्या होने लगी। अमेरिका के थार्सटन , थार्नडाईक, थॉमसन आदि मनोवैज्ञानिकों ने कारकों (factors) के आधार पर 'बुद्धि के स्वरूप' विषय में अपने-अपने विचार व्यक्त किये। इसी तरह फ्रांस में अल्फ्रेड बिने , ब्रिटेन में स्पीयरमेन ने भी बुद्धि के स्वरूप के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किये।

बिने का एक- कारक सिद्धान्त एक-कारक सिद्धान्त (Uni-factor Theory का प्रतिपादन फ्रांस के मनोवैज्ञानिक अल्फ्रेड बिने (Alfred Binet) ने किया तथा अमेरिका के मनोवैज्ञानिक टर्मन तथा जर्मनी के मनोवैज्ञानिक एंबिगास ने इसका समर्थन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार बुद्धि वह शक्ति है जो समस्त मानसिक कार्यों को प्रभावित करती है। इस सिद्धान्त के अनुयाइयों ने बुद्धि को समस्त मानसिक कार्यों को प्रभावित करने वाली एक शक्ति के रूप में माना है। उन्होंने यह भी माना है कि बुद्धि समग्र रूप वाली होती है और व्यक्ति को एक विशेष कार्य करने में अग्रसित करती है। यह एक एकत्व का खंड है जिसका विभाजन नहीं किया जा सकता है। इस सिद्धान्त के अनुसार यदि व्यक्ति किसी एक विशेष क्षेत्र में निपुण है तो वह अन्य क्षेत्रों में भी निपुण रहेगा। इसी एक कारकीय सिद्धान्त को ध्यान में रखते हुए बिने ने बुद्धि को व्याख्या-निर्णय की योग्यता माना है। टर्मन ने इसे विचार करने की योग्यता माना है तथा स्टर्न ने इसे नवीन परिस्थितियों के साथ समायोजन करने की योग्यता के रूप में माना है।

द्वितत्व सिद्धान्त

द्वितत्व सिद्धान्त (Bi-factor Theory) के प्रवर्तक ब्रिटेन के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक स्पीयर मेन हैं। उन्होंने अपने प्रयोगात्मक अध्ययनों तथा अनुभवों के आधार पर बुद्धि के इस द्वि-तत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। उनके मतानुसार बुद्धि दो शक्तियों के रूप में है या बुद्धि की संरचना में दो कारक हैं। इनम से एक को उन्होंने 'सामान्य बुद्धि' (General or G-factor) तथा दूसरे कारक को 'विशिष्ट बुद्धि' (Specific S- factor) कहा है। सामान्य कारक से उनका तात्पर्य यह है कि सभी व्यक्तियों में कार्य करने की एक सामान्य योग्यता होती है। अतः प्रत्येक व्यक्ति कुछ सीमा तक प्रत्येक कार्य कर सकता है। ये कार्य उसकी सामान्य बुद्धि के कारण ही होते हैं। सामान्य कारक व्यक्ति की सम्पूर्ण मानसिक एवं बौद्धिक क्रियाओं में पाया जाता है परन्तु यह विभिन्न मात्राओं में होता है। बुद्धि का यह सामान्य कारक जन्मजात होता है तथा व्यक्तियों को सफलता की ओर इंगित करता है।

व्यक्ति की विशेष क्रियाएं बुद्धि के एक विशेष कारक द्वारा होती है। यह कारक बुद्धि का विशिष्ट कारक (specific factor) कहलाता है। एक प्रकार की विशिष्ट क्रिया में बुद्धि का एक विशिष्ट कारक कार्य करता है तो दूसरी क्रिया में दूसरा विशिष्ट कारक। अतः भिन्न-भिन्न प्रकार की विशिष्ट क्रियाओं में भिन्न-भिन्न प्रकार के विशिष्ट कारकों की आवश्यकता होती है। ये विशिष्ट कारक भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। इसी कारण वैयक्तिक भिन्नताएं पाई जाती हैं।

www.ignited.in

बुद्धि के सामान्य कारक जन्मजात होते हैं जबकि विशिष्ट कारक अधिकांशतः अर्जित होते हैं। बुद्धि के इस दो-कारक सिद्धान्त के अनुसार सभी प्रकार की मानसिक क्रियाओं में बुद्धि के सामान्य कारक कार्य करते हैं जबकि विशिष्ट मानसिक क्रियाओं में विशिष्ट कारकों को स्वतंत्र रूप से काम में लिया जाता है। व्यक्ति के एक ही क्रिया में एक या कई विशिष्ट कारकों की आवश्यकता होती है। परन्तु प्रत्येक मानसिक क्रिया में उस क्रिया से संबंधित विशिष्ट कारक के साथ-साथ सामान्य कारक भी आवश्यक होते हैं। जैसे- सामान्य विज्ञान , सामाजिक अध्ययन , दर्शन एवं शास्त्र अध्ययन जैसे विषयों को जानने और समझने के लिए सामान्य कारक महत्वपूर्ण समझे जाते हैं वहीं यांत्रिक , हस्तकला, कला, संगीत कला जैसे विशिष्ट विषयों को जानने ओर समझने के लिए विशिष्ट कारकों की प्रमुख रूप से आवश्यकता होती है। इससे स्पष्ट है कि किसी विशेष विषय या कला को सीखने के लिए दोनों कारकों का होना अत्यन्त अनिवार्य है।

त्रिकारक बुद्धि सिद्धान्त

स्पीयरमेन ने सन् 1904 में अपने पूर्व बुद्धि के द्विकारक सिद्धान्त में संशोधन करते हुए एक कारक और जोड़कर बुद्धि के त्रिकारक सिद्धान्त (**Three factors theory of Intelligence)** का प्रतिपादन किया। बुद्धि के जिस तीसरे कारक को उन्होंने अपने सिद्धान्त में जोड़ा उसे उन्होंने 'समूह कारक' (ग्रुप फेक्टर) कहा। अतः बुद्धि के इस सिद्धान्त में तीन कारक-

1. सामान्य कारक
2. विशिष्ट कारक
3. समूह कारक

सम्मिलित किये गये हैं। स्पीयरमेन के विचार में सामान्य तथा विशिष्ट कारकों के अतिरिक्त समूह कारक भी समस्त मानसिक क्रियाओं में साथ रहता है। कुछ विशेष योग्यताएं जैसे यांत्रिक योग्यता , आंकिक योग्यता , शाब्दिक योग्यता , संगीत योग्यता , स्मृति योग्यता , तार्किक योग्यता तथा बौद्धिक योग्यता आदि के संचालन में समूह कारक भी विशेष भूमिका निभाते हैं। समूह कारक स्वयं अपने आप में कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रखता बल्कि विभिन्न विशिष्ट कारकों तथा सामान्य कारक के मिश्रण से यह अपना समूह बनाता है। इसीलिए इसे समूह कारक कहा गया है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इस सिद्धान्त में किसी प्रकार की नवीनता नहीं है। थार्नडाइक जैसे मनोवैज्ञानिकों ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि समूह कारक कोई नवीन कारक नहीं है अपितु यह सामान्य एवं विशिष्ट कारकों का मिश्रण मात्र है।

थार्नडाइक का बहुकारक बुद्धि सिद्धान्त

थार्नडाइक ने अपने सिद्धान्त में बुद्धि को विभिन्न कारकों का मिश्रण माना है। जिसमें कई योग्यताएं निहित होती हैं। उनके अनुसार किसी भी मानसिक कार्य के लिए, विभिन्न कारक एक साथ मिलकर कार्य करते हैं। थार्नडाइक ने पूर्व सिद्धान्तों में प्रस्तुत 'सामान्य कारकों' की आलोचना की और अपने सिद्धान्त में सामान्य कारकों की जगह मूल कारकों)Primary factors) तथा सर्वनिष्ठ कारकों मूल किया। उल्लेख का (फैक्टर्स कॉमन) ये है। किया सम्मिलित को योग्यताओं मानसिक मूल में कारकों योग्यता शाब्दिक -जैसे योग्यताएं, आंकिक योग्यता, यांत्रिक योग्यता, स्मृति योग्यता, तार्किक योग्यता तथा भाषण देने की योग्यता आदि हैं। उनके अनुसार ये योग्यताएं व्यक्ति के समस्त मानसिक कार्यों को प्रभावित करती है। थार्नडाइक इस बात को भी मानते हैं कि हर व्यक्ति में कोई न कोई विशिष्ट योग्यता अवश्य पायी जाती है। परन्तु उनका यह भी मानना है कि व्यक्ति की एक विषय की योग्यता से दूसरे विषय में योग्यता का अनुमान लगाना कठिन है। जैसे कि एक व्यक्ति यांत्रिक कला में प्रवीण है तो यह आवश्यक नहीं कि वह संगीत में भी निपुण होगा। उनके अनुसार जब दो मानसिक क्रियाओं के प्रतिपादन में यदि धनात्मक सहसंबंध पाया जाता है तो उसका अर्थ व्यक्ति में सर्वनिष्ट कारक भी हैं। ये उभयनिष्ठ कारक कितनी मात्रा में हैं यह सहसंबंध की मात्रा से ज्ञात हो सकता है।

थार्नडाइक ने बुद्धि को तीन प्रकार का बताया है ।

1-मूर्त बुद्धि- जैसे राजगीर इंजीनियर

2-अमूर्त बुद्धि-डाक्टर चित्रकार मनोवैज्ञानिक

3-सामाजिक बुद्धि- नेता समाजसेवी

थर्स्टन का समूह कारक बुद्धि सिद्धान्त

थर्स्टन (Thurston) के समूह कारक बुद्धि सिद्धान्त (Group factors Intelligence Theory) के अनुसार बुद्धि न तो सामान्य कारकों का प्रदर्शन है, न ही विभिन्न विशिष्ट कारकों का, अपितु इसमें कुछ ऐसी निश्चित मानसिक क्रियाएं होती हैं जो सामान्य रूप से मूल कारकों में सम्मिलित होती है। ये

नसिक क्रियाएं समूह का निर्माण करती हैं जो मनोवैज्ञानिक एवं क्रियात्मक एकता प्रदान करते हैं। थर्स्टन ने अपने सिद्धान्त को कारक विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत किया। उनके अनुसार बुद्धि की संरचना कुछ मौलिक कारकों के समूह से होती है। दो या अधिक मूल कारक मिलकर एक समूह का निर्माण कर लेते हैं जो व्यक्ति के किसी क्षेत्र में उसकी बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं। इन मौलिक कारकों में उन्होंने आंकिक योग्यता, प्रत्यक्षीकरण की योग्यता (Perceptual ability), शाब्दिक योग्यता (Verbal ability), दैशिक योग्यता (Spatial ability), शब्द प्रवाह (Word fluency), तर्क शक्ति और स्मृति शक्ति (mental power) को मुख्य माना। थर्स्टन ने यह स्पष्ट किया कि बुद्धि कई प्रकार की योग्यताओं का मिश्रण है जो विभिन्न समूहों में पाई जाती है। उनके अनुसार मानसिक योग्यताएं क्रियात्मक रूप से स्वतंत्र है फिर भी जब ये समूह में कार्य करती है तो उनमें परस्पर संबंध या समानता पाई जाती है। कुछ विशिष्ट योग्यताएं एक ही समूह की होती हैं और उनमें आपस में सह-संबंध पाया जाता है। जैसे विज्ञान विषयों के समूह में भौतिक, रसायन, गणित तथा जीव-विज्ञान भौतिकी एवं रसायन आदि। इसी प्रकार संगीत कला को प्रदर्शित करने के लिए तबला, हारमोनियम, सितार आदि बजाने में परस्पर सह-संबंध रहता है।

थॉमसन का प्रतिदर्श सिद्धान्त

थॉमसन (Thomson) ने बुद्धि के प्रतिदर्श सिद्धान्त (Sampling Theory of Intelligence) को प्रस्तुत किया। उनके मतानुसार व्यक्ति का प्रत्येक कार्य निश्चित योग्यताओं का प्रतिदर्श होता है। किसी भी विशेष कार्य को करने में व्यक्ति अपनी समस्त मानसिक योग्यताओं में से कुछ का प्रतिदर्श के रूप में चुनाव कर लेता है। इस सिद्धान्त में उन्होंने सामान्य कारकों (G-factors) की व्यावहारिकता को महत्व दिया है। थॉमसन के अनुसार व्यक्ति का बौद्धिक व्यवहार अनेक स्वतंत्र योग्यताओं पर निर्भर करता है परन्तु परीक्षा करते समय उनका प्रतिदर्श ही सामने आता है।

व्यक्तित्व के गुण

1. शारीरिक गुण

2.मानसिक गुण

3. सामाजिक गुण

4. संवेगात्मक गुण

5. चारित्रिक गुण

6. आत्म चेतना

7. सामाजिकता

8. शारीरिक एवं मानसिक

9. सामंजस्य

10. लक्ष्य की प्राप्ति

11. एकता एवं एकीकरण

12. दृढ़ इच्छाशक्ति

13. विकास की निरंतरता

शारीरिक गुण :- व्यक्ति के शारीरिक दोनों के अंतर्गत शरीर की लंबाई, चौड़ाई, भार, आवाज, मुखाभिव्यक्ति, रूप, रंग, आंखों की रचना तथा मन है। आकर्षक रंग, रूप, अच्छी वाणी, अच्छी कद और अच्छा स्वास्थ्य अच्छे व्यक्तित्व की विशेषता होती है।

मानसिक गुण :- उच्च स्तर का बुद्धि अच्छी चिंतन शक्ति तार्किक शक्ति सृजनशीलता कल्पनाशील उत्तम विचार आदि अच्छे व्यक्तित्व के गुण हैं बुद्धि स्वाभाव तथा चरित्र तीनों ही व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं सामान्य मंद तथा उत्कृष्ट बुद्धि वाले व्यक्तियों के व्यक्तित्व में तदनुरूप विभिन्न ता पाई जाती है। सामान्य तथा मन्द बुद्धि के लोग कुछ बुद्धि वालों का अनुकरण करते हैं स्वभाव के अंतर्गत आशावादी निराशावादी चिड़चिड़ा तथा अस्थिर व्यक्ति आते हैं चरित्र के अंतर्गत सामाजिक धार्मिक विश्वास नैतिक मान्यताएं तथा आचरण नहीं होते हैं।

सामाजिक गुण :- व्यक्तित्व का सर्वाधिक सशक्त पक्ष उसके सामाजिक गुण हैं इन्हीं गुणों के कारण व्यक्ति लोकप्रिय होता है। सामाजिकता, परोपकार की भावना, दया की भावना, नैतिकता सहयोग की भावना भाईचारा की भावना इत्यादि व्यक्ति के अच्छे गुण होते हैं।

संवेगात्मक गुण :- उच्च आकर्षक उद्देश्य पूर्णता आशावादी एवं ईर्ष्या भाव मुख्य संवेगिक स्थिरता आदि की प्रमुख विशेषता है।

चारित्रिक गुण :- जिन व्यक्ति में संकल्प शक्ति ईमानदारी निष्ठभाव देश प्रेम भ्रातृत्व मातृत्व कर्तव्य प्राण्यता इत्यादि व्यक्ति के अच्छे गुण होते हैं। एक मनुष्य के चरित्र का उसके व्यक्तित्व का निर्माण करने में अत्यंत योगदान रहता है। मैं सच्चा या झूठा हूं दूसरों के साथ ईमानदारी करता हूं या बेईमानी दूसरों की चीज को हथियाने में मुझे शर्म है या नहीं। जो व्यक्ति झूठ बोलता है बेईमान है चोर है उसका चरित्र ठीक नहीं समझा

www.ignited.in

जाता। जिसका चारित्रिक ठीक नहीं होता उसका व्यक्तित्व शारीरिक रूप से भले ही आकर्षक हो उसकी पोल शीघ्र ही खुल जाती है। महात्मा गांधी सुंदर व आकर्षक ना थे परंतु उनके चरित्र के ही कारण उनका व्यक्तित्व असाधारण रूप से आकर्षक था विश्वा में उनकी पूजा होती है।

आत्मचेतना :- व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता व्यक्ति में आत्म चेतना का होना है जिसका तात्पर्य व्यक्ति का या ज्ञान है कि वह कौन है समाज में उसकी क्या स्थिति है तथा अन्य लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं इसकी ज्ञान को आत्म चेतना के रूप में जाना जाता है। जो कि मनुष्य में ही पाया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति को समाज के संदर्भ में अपने अस्तित्व का ज्ञान आवश्यक है यही ज्ञान उसके व्यवहार को प्रेरित करता है।

सामाजिकता :- व्यक्ति की सामाजिक कुशलता जिसमें वह समाज के अन्य व्यक्तियों के संपर्क में आकर अन्त करता क्रिया : है बनती पहचान उनकी में समाज तथा है समझता को समाज है। में विकास के व्यक्तित्व या हैं। जाती जानी में रूप के सामाजिकता घटक प्रमुख है।

शारीरिक एवं मानसिक :- शरीर व मस्तिष्क बेटी के प्रमुख अंग हैं इसमें किसी प्रकार की गड़बड़ी व्यक्तित्व के विकास में बाधक हो सकती हैं अतः शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य का होना व्यक्तित्व के विकास के लिए अति आवश्यक है।

सामजस्य :- व्यक्तित्व के अनेक विमाएं एवं क्षेत्र होते हैं जिनसे व्यक्तित्व का निर्माण होता है जैसे विभिन्न शीलगुण व्यवहार संरचना रहन सहन तथा गति आदि इन सभी के बीच सामंजस्य स्थापित करना व्यक्तित्व की विशेषता है।

लक्ष्य की प्राप्ति :- बिना किसी कारण के व्यक्ति कोई भी व्यवहार निष्पादित नहीं करता है मानव के व्यवहार का सदैव एक निश्चित उद्देश्य होता है उसके व्यवहार और लक्ष्यों की जानकारी प्राप्त करके उसके व्यक्तित्व का अनुमान लगाया जा सकता है।

एकता एवं एकीकरण :- व्यक्तित्व के सभी तत्व शारीरिक मानसिक नैतिक सामाजिक तथा संवेगात्मक के बीच एकता एवं एकीकरण होता है। यह सभी मिलकर एक इकाई के रूप में कार्य करते हैं। एकता एवं एकीकरण का हमारे जीवन में महत्व है जिसे सामाजिकता एवं राष्ट्रीयता का विकास होता है।

संदर्भ सूची

1. डी एन श्रीवास्तव (2008-2009) सांख्यिकी एवं मापन अग्रवाल पब्लिकेशन

2. श्रीवास्तव डी.एन (2009) अनुसंधान विधियां आगरा साहित्य प्रकाशन

3. सतीशकुमार (2009) अध्यापक शिक्षा की समस्याएँ एवं चुनौतियाँ भारतीय आधुनिक शिक्षा

4. बी.एस.राजसपा (2010) शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व

5. प्रसाद लोकेश के (2010) अनुसंधान पद्वतिशास्त्र नई दिल्ली कोवरी बुक्स

6. लोकेश कौल (2010) शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली

Corresponding Author

ममता शर्मा*

शोधार्थी, लाडर्स विश्वविद्यालय, अलवर (राज.)